© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 3| Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Education

महायोगी गुरु गोरखनाथ : साहित्यक अनुशीलन

डॉ0 दानपाल सिंह
0177A काजीपुरखुर्द,
गोरखपुर, उ0प्र0।

गोरखनाथ जी के नाम से संस्कृत और हिन्दी में अनके रचनायें प्राप्त होती है इनकी हिन्दी रचनाओं का एक अच्छा प्रामाणिक संग्रह गोरखवाणी के नाम से डॉ. पिताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने किया है जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा प्रकाशित भी है। बड़थ्वाल जी द्वारा प्रकाशित गोरखवाणी संग्रह में कुल 40 पुस्तकों का उल्लेख है।[1] विद्वान सम्पादक ने इन ग्रन्थों में से प्रथम 14 की प्राचीनता स्वीकार की है। जबकि संख्या 15 से 19 तक की प्रतियों को दूसरे की रचना माना है।[2] सम्भवतः इनका मूलोद्भव 11वीं शति में ही हुआ हो जो गोरखनाथ जी का आविर्भावकाल है।[3] गोरखनाथ जी द्वारा लिखित संस्कृत ग्रन्थों में 28 ग्रन्थों का उल्लेख आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी और अन्य शोधकर्त्ताओं ने किया है।[4] द्विवेदी जी ने विचार कर यह निर्णय दिया है कि गोरखनाथ जी के नाम से प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थों में अधिकांश के कर्त्ता स्वयं गोरखनाथ नहीं थे।[5] नाथसाहित्य के एक दूसरे विद्वान डॉ0 नागेन्द्रनाथ उपाध्याय ने उपर्युक्त 28 संस्कृत रचनाओं में 15 ग्रन्थों को गोरखनाथ की रचना होने की संभावना व्यक्त की है।[6] सम्पूर्ण रचनाओं का सूक्ष्म और विवेचनात्मक अध्ययन करने के पश्चात जहाँ यह कहना निश्चित रूप से संदिग्ध है कि उक्त रचनाये गोरखनाथ द्वारा ही कृत हैं वहाँ इतना निश्चित ही कहा जा सकता है कि उक्त सभी संस्कृत और हिन्दी ग्रन्थों में परम्परा प्राप्त नाथपंती दर्शन साध्ना और विचार का ही पूर्वोत्तरकालीन स्वरूप विद्यमान है जिसके अध्ययन से नाथपंत और उनकी मान्यताओं का आंकलन किया जा सकता है। नाथदर्शन एवं साधना के स्परूप को समझने के लिये संस्कृत रचनाओं का किंचित परिचय यहाँ दिया जा रहा है क्योंकि हिन्दी ग्रन्थों की तुलना में इनकी प्राचीनता और प्रामाणिकता तथा विचारशैली निश्चित रूप से अधिक व्यवस्थित और विचारणीय है।[7]

सिद्धसिद्धान्त पद्धतिः नाथदर्शन औश्र साधना के अध्ययन अथवा स्परूप निरूपण की दृष्टि से यह एक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है क्योंकि इसमें बड़े ही स्पष्ट और व्यवस्थित ढंग से नाथदर्शन औश्र साधना का क्रमिक विवरण प्रस्तुत किया गया है यह ग्रन्थ गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह एवं सिद्धसिद्धान्तसंग्रह से

पहले लिखा जा चुका था क्योंकि उक्त ग्रन्थों के कुछ वचन इस ग्रन्थ में मिलते है।[8] इसे गोरक्षोपनिषद् ही कहा जाता है। सिद्धसिद्धान्त पद्धति कुल छः अध्यायों में जिन्हें वहाँ उपदेश कहा गया है विभक्त है। प्रथम अध्याय में पिण्डोत्पत्ति का दूसरें अध्याय में पिण्डविचार अर्थात् शरीर रचना पर विचार, तीसरे अध्याय में पिण्डसंवत्ति पर विचार, चौथे अध्याय में पिण्डाधार अर्थात शरीर के रक्षक पर विचार, पाँचवें अध्याय में नाथपंथी साधना के अन्तिम लक्ष्य समरसकरण पर विचार और छठें तथा अन्तिम अध्याय में अवधूतयोंगी के चरित्र और आचरण पर विस्तार से विचार किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में आधारभूत सामग्री का संकलन प्रायः इसी ग्रन्थ से किया गया है।

अमनस्क का योग : इस ग्रन्थ की एक अपूर्ण और त्रुटिपूर्ण प्रति योगनाथ स्वामी को कन्नड भाषा में लिखी मिली थी। उन्होंने प्रयास कर 211 श्लोक उपलब्ध किये थे। डा0 गोपीनाथ कविराज ने इसकी अपूर्णता और अशुद्धियाँ भी दूर कीं। डा0 द्विवेदी और पं0 गोपीनाथ कविराज ने इस ग्रन्थ की प्रामणिकता संदिग्ध मानी है किन्तु कन्नड लिपि में प्राप्त इस ग्रन्थ को संस्कृत लिपि में सम्पादित और प्रकाशित करने वाले योगनाथ स्वामी इसे गोरखनाथ द्वारा रचित ग्रन्थ ही मानते है। यह दो भागों में विभक्त है। पूर्वाध के 98 श्लोकों में जहाँ तारकयोग का वर्णन है वहीं बाद के 113 श्लोकों में अमनस्कयोग का निरूपण किया गया है। यह ग्रन्थ ईश्वर एवं वामदेव के संवाद के रूप में लिखा गया है।

अमरौघशासनम् : इस ग्रन्थ के रचयिता श्रीमन्महामाहेश्वराचार्य श्री सिद्ध गोरक्षनाथ को बताया गया है। महामहोपाध्याय पं0 मुकुन्दराम शास्त्री द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ कभी काशमीर संस्कृत ग्रन्थावली (ग्रन्थांक–20) में प्रकाशित हुयी थी किन्तु अब इसका प्रकाशन श्री गोरखनाथ मन्दिर सहित कयी स्थानों से हो चुका है। नाथ दर्शन और साधना की दृष्टि से यह भी एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। जैसा कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बताया है। इसमें गोरक्षनाथ के सिद्धान्तों का सूत्ररूप में संकलन है और यह पुस्तक हठयोग की साधना का शैवागमो से सम्बन्ध जोड़ती है।

अवधूत–गीता : गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह पृ0–75 में इसे गोरक्षनाथकृत बताया गया है किन्तु कदाचित यह दत्तात्रेयकृत रचना है जिसे दत्तात्रेय ने उपदेश के रूप में कार्तिके स्वामी को सुनाया था। इस ग्रन्थ के सभी अध्याय आत्मसंवित्ती के उपदेश से भरे पड़े है। आत्मा, परमात्मा, जीव एवं शिव की एकता का ज्ञान कराना इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है।

गोरक्षपद्धति : यह 200 संस्कृत श्लोकों का संग्रह है महिधर शर्मा कृत भाषा अनुवाद सहित श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रसे मुम्बई से पहले प्रकाशित हुयी थी अब इसका प्रकाशन अन्य भी कयी स्थानों से हो चुका है। इसे बताया गया है कि समस्त साधनों का मूल योग है। यद्यपि जप–तप ओर उपनिषद ज्ञान आदि मोक्ष के अनेक हेतु है तथापि सर्वोत्कृष्ट योग ही है। इस ग्रन्थ का प्रथम शतक गोरक्षशतक नाम

से कयी बार छप चुका है। इसी का नाम गोरखनाथ भी है। गन्थ के प्रथम 100 श्लोकों में जहाँ आसन शट्चक्र निरूपण 10 नाडी वर्णन, 10 वायु वर्णन, शक्तिचालन एवं उसकी विशेष विधि, मुद्रा बन्ध, महाबेध आदि का निरूपण किया है वहीं दूसरे शतक में शटकर्मों द्वारा शरीर को निर्दोष बना आसन प्राणयाम के सम्यक अभ्यास का निर्देश दिया गया है। यहाँ प्रत्याहार धारणा और ध्यान तथ समाधि का भी विवेचन किया गया है। दूसरे शतक का नाम योगशास्त्र भी बताया गया है। डा0 नागेन्द्रनाथ उपाध्याय ने इसे गोरखनाथ की मूल रचना नहीं मानते हुये एक स्वतन्त्र ग्रन्थ बताया है।[9]

गोरक्षशतक : गोरखनाथ और कनपटायोगी सम्प्रदाय के विद्वार अद्येता ब्रिग्स ने गोरक्षशतक को बड़ी प्रामाणिक रचना माना है। उनके मत से गोरक्षशतक टीका, गोरक्षशतक टिप्पण, गोरक्षकल्प, गोरक्षपद्धति, योगसिद्धान्त पद्धति और सिद्धसिद्धान्त पद्धति नामक ग्रन्थ गोरक्षशतक के ही भाष्य परिशिष्ट तथा टिप्पणी आदि है।[10] किन्तु डा0 नागेन्द्रनाथ उपाध्याय का विचार है कि यह ग्रन्थ गोरक्षसंहिता की अपेक्षा बहुत बाद में लिखा गया ग्रन्थ है। इसमें योग को मुक्ति के परमसाधन के रूप में स्वीकार करते हुये उसे स्रुतीकल्पतरू का फल कहा गया है।[11] इस ग्रन्थ में सडङ्योग के अतिरिक्त चक्र शोडषाधार प्रमुख नाडियों कुण्डनीजागरण एवं मुद्रासिद्ध की भी विवेचना की गयी है।

गोरक्षसंहिता : नाथ सम्प्रदाय दर्शन और साधना की दृष्टि से यह ग्रन्थ काफी महत्वपूर्ण है। राय दिनेशचन्द्र सेन ने अन्य संस्कृत ग्रन्थों की तुलना में गोरक्षसंहिता को श्रेष्ठ माना है। कभी यह ग्रन्थ प्रसन्न कुमार कविरत्न ने सम्वत् 1497 में प्रकाशित कराया था। जिसका एक संकरण इन्द्रजीत शर्मा द्वारा सन् 1950 में हुआ था। इस ग्रन्थ में आदि और भूति नामक दो प्रकरण उपलब्ध होते है। प्रथम प्रकरण में 27 पटलों का निर्देश है। इन पटलों में तन्त्रानुकूल भैरवस्थान एवं स्वरूप वर्णन, पीठाधार हिमवत की स्थिति, पूर्णपीठ तथा कामरूपपीठ का वर्णन करते हुये कामदेव के दाहनोपरान्त पार्वती से विवाह के लिये देवों द्वारा की गयी शिव की स्तुति, शिव विवाह, माहेश्वरी आदि छः मातृमूर्तियों का स्वरूप वर्णन शवसाधनप्रकार एवं मालिनीचक्रपूजन, कौमारीवैष्णवीवाराही और चामुण्डा आदि माताओं की पद संख्या, वर्ण संख्या, शडविध न्यास मार्ग, देवीचक्र, तीन मुद्राओं, इनके साधन क्रम स्वरूप एवं फलों की चर्चा, जालंधरनाथ की उत्पत्ति उनकी ध्यान एवं पूजा विधि आदि विभिन्न विषयों का विवेचन मिलता है।

महार्थमंजरी : इसकी रचना महेश्वानन्द द्वारा बतायी गयी है। प्रारम्भ में इसका काश्मीर संस्कृत ग्रन्थावली (नं0 11) में प्रकाशन हुआ था। इसका एक और दूसरा संस्करण त्रिवेन्द्रम सिरीज में प्रकाशित है। महेश्वरानन्द गोरक्षनाथ जी का ही दूसरा नाम है पुस्तक की भाषा काश्मीरी अपभ्रंश है परन्तु ग्रन्थकार ने स्वयं इस पर परिमलनामक टीका लिखी है। इसमें 26 तत्त्वों की व्याख्या की गयी है। इन्हीं

से सारे संसार का उदय होता है। इस ग्रन्थ में क्रम, कुल एवं प्रतिभिाा नामक तीनों दर्शनों का समन्वय दिखलायी पड़ती है जिसका कयी दृष्टियों से बड़ा महत्व है।

गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह : इस ग्रन्थ की एक अपूर्ण मातृका महामहोपाध्याय पं0 गोपीनाथ कविराज को मिली थी जिसे उन्होंने महत्वपूर्ण समझकर 1925 ई0 में सरस्वती भवन गन्थ माला के 18 पुष के रूप मं प्रकाशित कराया था। अब इसके कयी संस्करण प्रकाशित हो चुके है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में जहाँ नाथ की स्तुति की गयी है वही अवधूत का स्वरूप एवं लक्षण, योगी के मुख्य चिन्ह, नाथलक्षण, अन्य मतावलम्बियों की तत्त्वप्राप्ति में असमर्थता, भोग की अपेक्षा योग की श्रेष्ठता, कापालिक मत की उत्पति, नाथ द्वारा शैवशाक्त मत का प्रवर्तन, सभी दर्शनों का स्वरूप दर्शन में समन्वय, नादानुसंधान से राजयोग की प्राप्ति, नाथ सिद्धान्त का महत्व, चारों युगों में नाथ की उपस्थिति एवं चार प्रकार की मुक्ति, नवनाथों की बासभूमि, शासत्राभ्यास की अपेक्षा योगाभ्यास का प्रतिपादन, आचार की अपेक्षा विचार का प्राधान्य, गुरुवचन का माहात्म्य, स्मार्त आदि मतों मिथ्यात्व, निगुर्ण–सगुण की अपेक्षा नाथ की सर्वोपरिता तथा अन्य साम्प्रदायिक ग्रन्थों की अनुपयोगिता आदि अनेक विषय निरूपित और विवेचित है।

विवेकमार्तण्ड : इस ग्रन्थ के कुछ वचन गोरक्षसिद्धान्त संग्रह में और कुछ श्लोक गोरक्षशतक में मिलते है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार यद्यपि इसे रामेश्वर भट्टा का लिखा बताया गया है तो भी आफ्रेक्ट के अनुसार इसे गोरक्षंकृत मानना ही उचित है। कल्याण मलिक द्वारा मुद्रित प्रति में इस ग्रन्थ में कुल 188 श्लोक है जबकि क्षेमराज की मुद्रित प्रति में 201, जोधपुर से प्राप्त में 203–204, बीकानेर से प्राप्त प्रति में 197 श्लोक मिलते है। अब इसके भी कयी संस्करण प्रकाशित हो चुके है। इसमें जहाँ यम–नियम, आसन, प्राणायाम, चक्र आदि का वर्णन किया गया है वहीं अजपाजाप गायत्री को योगियों के लिये मोक्षदायनी बताते हुये साधक को युगताहार का ध्यान रखते हुये कुण्डलनीय जागरण से मोक्ष द्वार खोलने की बात कही गयी है। जिसमें बताया गया है कि पाँच घटिकाओं के अभ्यास से धारणा, साठ घटिकाओं के अभ्यास से ध्यान तथा बारह दिनों के प्राण संयम से समाधि दशा की प्राप्ति होती है।[12]

योगबीजम् : यह कुल 190 श्लोकों का ग्रन्थ है। सम्पूर्ण रचना माहेश्वर और गौरी के सम्वाद के रूप में है। गौरी को मुक्ति का उपाय बताते हुये माहेश्वर ने कहा है कि केवल ज्ञान से सिद्धी नही होती। योग के बिना ज्ञन भला कैसे मोक्ष प्रदान कर सकात है और ज्ञान के बिना योग भी मोक्ष देने में समर्थ नहीं है।[13] 160 नानामार्गों से दुष्प्राप्य परमपद कैवल्य केवल सिद्ध मार्ग से मिलता है। इसलिए शास्त्र जालों में फँसने से श्रेष्ठ है योगाभ्यास करना। ग्रन्थकार ने बताया है शरीरधारी मनुष्य अपक्व तथा परिपक्व भेद से दो प्रकार के होते है। इनमें योगहीन अपक्व होते हैं और योगयुक्त पक्व होते है। योगाग्नि से परिक्वदेही, चेतन एवं शोक वर्जित हो जाता है। इसके विपरीत अपक्व पर्थिवदेह को

जड़े जानना चाहिये तथा वह दुःखदायी होता है।[14] उपरोक्त प्रमुख ग्रन्थों में नाथ दर्शन एवं साधना सम्बन्धी विभिन्न विषय पर्याप्त मात्रा में उपस्थित किये जा चुके है, इसलिए गोरक्षनाथ द्वारा विरचित बताये गये अन्य उल्लिखित ग्रन्थों का पृथक रूप से निरूपण न करते हुये उन्हें आकर ग्रन्थों में देखना ही उचित है।

संदर्भ सूची

1— द्रष्टव्य – गोरखवाणी – डा0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रकाशन, पृ0–44–15 (1) सवदी, (2) पद, (3) सिष्या दरसन, (4) प्राण संकली, (5) नरवै बोध, (6) आत्मबोध(1), (7) अभैमात्रा जोग, (8) पंद्रहतिथि, (9) सप्तवार (10) मछीन्द्र गोरख बोध, (11) रोमावली, (12) ग्यान चौतीसा, (14) पंचमात्रा, (15) गोरख गणेश गोष्टी, (16) गोरखदत्त गोष्टी (ग्यानदीपबोध), (17) महादेव गोरखगुष्टि, (18) सिष्ट पुरान, (19) दयाबोध, (20) जाती भौरावली (छंद गोरख), (21) नवग्रह, (22) नवरात्र, (23) अष्ट पारछ्या, (24) रहरास, (25) ग्यान माला, (26) आत्मबोध(2), (27) व्रत, (28) निरंजन पुराण, (29) गोरखवचन, (30) इन्द्रो देवता, (31) मूल गर्भावली, (32) खाणी वाणी, (33) गोरख सत, (34) अष्टमुद्रा, (35) चौबीस सिधि, (36) पडक्षरी, (37) पंचअग्नि (38) अष्टचक्र, (39) अबलि सिलूक, (40) काफिर बोध

2— द्रष्टव्य – वही, गोरखवाणी डा0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, पृ0–16–17

3— द्रष्टव्य – वही, पृ0–113

4— द्रष्टव्य – वही, पृ0–109–111

5— द्रष्टव्य – वही, पृ0–111

6— द्रष्टव्य –गोरखनाथ एवं उनकी परम्परा का साहित्य, डा0 दिवाकर पाण्डेय, पृ0–83

7— द्रष्टव्य – नाथसम्प्राय, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

8— द्रष्टव्य – नाथ और संतसाहित्य तुलनात्मक अध्ययन, डा0 नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, पृ0–29

9— द्रष्टव्य – वही, पृ0–29

10— द्रष्टव्य – गोरखनाथ एवं उनकी सरम्परा का साहित्य, डा0 दिवाकर पाण्डेय, पृ0–84–85

11— द्रष्टव्य – द्विजसेवितशाखस्य श्रुतिकल्पतरोंः फलम्।
शमनं भवतापस्य योगं भजत सत्तमाः।। श्लोक सं0–6

12— द्रष्टव्य – धारणा पंचनाडीभिर्ध्यानं स्यात् षष्टिनाडिभिः।
दिन द्वादशकेनैव समाधिः प्राण संयमात्।।–(विवेकमार्त्तण्ड–श्लोक–185)

13— द्रष्टव्य – योगहीनं कथं ज्ञानं, मोक्षदं भवतीश्वरि।।
योगाऽपि ज्ञानहीनस्तु, न क्षमो मोक्षकर्मणि।।–योगवीजम्, श्लोक–19

14— द्रष्टव्य – पक्वो योगग्निना देही, ह्यजडः शोकवर्जितः।
जडस्तत्पार्थिवो ज्ञेयश्चापक्वो दुखःदो भवेत्।। – योगवीजम्, श्लोक–35